के लिए खुला रहेगा।

किया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री भजन लाल

किया जाएगा।

अनुसंधान को कैसे धरातल पर उतारा जाता है वह एसकेआरएयू के मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण में देखने को मिला : विशाल

मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण के समापन

■ बीकानेर (नि.सं.)

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण का गुरुवार को समापन हुआ। मानव संसाधन विकास निदेशालय सभागार में हुए समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रशिक्षु आईपीएस श्री विशाल और विशिष्ट अतिथि कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी व वित्त नियंत्रक श्री राजेन्द्र कुमार खत्री थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की। कृषि महाविद्यालय, बीकानेर के पादप रोग विज्ञान विभाग की मशरूम उत्पादन इकाई द्वारा आयोजित प्रशिक्षण के समापन कार्यक्रम में अतिथियों ने बीकानेर, चूरू, श्रीगंगानगर, जोधपुर, झुंझुनूं समेत विभिन्न जिलों के 60 से ज्यादा प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

समापन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रशिक्षु आईपीएस श्री विशाल ने कहा कि विश्वविद्यालयों में हम अनुसंधान की बातें करते हैं लेकिन अनुसंधान को कैसे धरातल पर उतारा जाता है। वह स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण कार्यक्रम में देखने को मिला। साथ ही कहा कि प्रशासन में जो 360 डिग्री इवोल्यूशन की बात की जाती है वह इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उतारा गया। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण को अगली बार और बेहतर बनाने के लिए प्रतिभागियों से सुझाव भी लें।

कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि इस प्रशिक्षण के जरिए निश्चित रूप से मशरूम के इंटरप्रेन्योर तैयार होंगे। साथ ही कहा कि कृषि विश्वविद्यालय में विभिन्न प्रशिक्षण लेने के बाद जो भी इंटरप्रेन्योर बने हैं उनके उत्पादों को आगामी कृषि मेले में निशुल्क स्टॉल आवंटित कर प्रदर्शित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रतिभागियों के सुझाव को मानते हुए कृषि विश्वविद्यालय में जल्द ही बटन मशरूम उत्पादन को लेकर 35 दिन की ट्रेनिंग कराई जाएगी। कृषि विश्वविद्यालय अपने दायित्वों के निर्वहन में कोई कोर कसर नहीं छोड़ेगा।

कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी ने कहा प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण में जो भी सीखा, बारे में अन्य लोगों को भी बताएं। सोशल मी का जमाना है सोशल मीडिया के जरिए भी बता सकते हैं। उन्होंने कहा कि मशरूम उत्पादन से मशहूर होने की बात हो जाए तो हम सबके लिए बड़ी खुशी की बात होगी और जो इस प्रशिक्षण से महरूम रह गए,उन तक भी प्रशिक्षण की बात पहुंचे तो बड़ी खुशी होगी।

बीकानेर में मशरूम की खेती

लाखों का बिजनेस

पंजाब केसरी
FRI, 13 DECEMBER 2024
EDITION: RAJASTHAN , PAGE NO. 5

अनुसंधान को कैसे धरातल पर उतारा जाता है, वह एस.के.आर.ए.यू. के मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण में देखने को मिला : विशाल

■ हिमाचल के सोलन में 60-70 हजार खर्च कर मशरूम उत्पादन की ट्रेनिंग ली :ज्योति

बीकानेर, 12 दिसंबर (प्रेम): स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर 7 दिवसीय प्रशिक्षण का गुरुवार को समापन हुआ।

मानव संसाधन विकास निदेशालय सभागार में हुए समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रशिक्षु आईपीएस विशाल और विशिष्ट अतिथि कुलसचिव डॉ. देवा राम सैनी व वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने की।

कृषि महाविद्यालय, बीकानेर के पादप रोग विज्ञान विभाग की मशरूम उत्पादन इकाई द्वारा आयोजित प्रशिक्षण के समापन कार्यक्रम में अतिथियों ने बीकानेर, चूरू, श्रीगंगानगर, जोधपुर, झुंझुनूं समेत विभिन्न जिलों के 60 से ज्यादा प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

समापन कार्यक्रम में भाग लेते हुए। (प्रेम)

समापन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रशिक्षु आई.पी.एस. विशाल ने कहा कि विश्वविद्यालयों में हम अनुसंधान की बातें करते हैं, लेकिन अनुसंधान को कैसे धरातल पर उतारा जाता है, वह स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण कार्यक्रम में देखने को मिला, साथ ही कहा कि प्रशासन में जो 360 डिग्री इवोलुशन की बात की जाती है, वह इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उतारा गया।

कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने कहा कि इस प्रशिक्षण के जरिए निश्चित रूप से मशरूम के इंटरप्रेन्योर तैयार होंगे, साथ ही कहा कि कृषि विश्वविद्यालय में विभिन्न प्रशिक्षण लेने के बाद जो भी इंटरप्रेन्योर बने हैं, उनके उत्पादों को आगामी कृषि मेले में नि:शुल्क स्टॉल आवंटित कर प्रदर्शित किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि प्रतिभागियों के सुझाव को मानते हुए कृषि विश्वविद्यालय में जल्द ही बटन मशरूम उत्पादन को लेकर 35 दिन की ट्रेनिंग कराई जाएगी। कृषि विश्वविद्यालय अपने दायित्वों के निर्वहन में कोई कोर कसर नहीं छोड़ेगा। कुलसचिव डॉ. देवा राम सैनी ने कहा कि प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण में जो भी सीखा, उसके बारे में अन्य लोगों को भी बताएं। सोशल मीडिया का जमाना है सोशल मीडिया के जरिए भी बता सकते हैं।

वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री ने कहा कि उन्हें बहुत खुशी हुई जब प्रतिभागियों ने कहा कि हमारी बहुत ही उपयोगी ट्रेनिंग हुई है। विश्वविद्यालय का इस प्रशिक्षण पर जितना भी खर्च हुआ है, उसका हमें शत प्रतिशत लाभ प्राप्त हुआ है।

प्रशिणार्थी ज्योति ने बताया कि इसी साल फरवरी में हिमाचल के सोलन में करीब 60-70 हजार रुपए खर्च कर मशरूम उत्पादन की ट्रेनिंग ली, लेकिन ज्यादा समझ नहीं आया।

एस.के.आर.ए.यू. में मातृभाषा में जिस तरह से व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया।

कृषि विश्वविद्यालय में लगेगी 2 मीट्रिक टन क्षमता की शहद प्रोसेसिंग यूनिट

-उत्तरी पश्चिमी राजस्थान में मधुमक्खी पालन पर है यह पहला प्रोजेक्ट

-मिनी शहद परीक्षण प्रयोगशाला की भी होगी स्थापना

-भारत सरकार के राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड ने दी मंजूरी

गरज @ बीकानेर

बीकानेर के स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में 2 मीट्रिक टन क्षमता की शहद एवं मधुमक्खी छत्ते से प्राप्त उत्पादों की प्रोसेसिंग यूनिट स्थापित की जाएगी। साथ ही शहद की गुणवत्ता जांचने के लिए मिनी शहद परीक्षण प्रयोगशाला की भी स्थापना होगी। इसके अलावा मधुमक्खी पादप उद्यान का विकास भी किया जाएगा। कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने बताया कि यह सब भारत सरकार के राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड द्वारा कृषि महाविद्यालय बीकानेर के कीट विज्ञान विभाग को राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन एवं शहद मिशन के तहत 12 दिसंबर को स्वीकृत किए गए 83.75 लाख रुपए के प्रोजेक्ट के तहत होगा। कुलपति डॉ.

अरुण कुमार ने बताया कि उत्तरी पश्चिमी राजस्थान में मधुमक्खी पालन को लेकर यह पहला प्रोजेक्ट स्वीकृत किया गया है। यह प्रोजेक्ट मधुमक्खी पालन के क्षेत्र में किसानों और उद्यमियों के लिए नए अवसर प्रदान करेगा। साथ ही, शहद और मधुमक्खी उत्पादों की उत्पादन क्षमता और गुणवत्ता में सुधार से यह क्षेत्र आत्मनिर्भर भारत अभियान में योगदान देगा। कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एल.एल. देशवाल ने बताया कि इस प्रोजेक्ट का उद्देश्य मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देना, उद्यमिता विकास करना और इससे संबंधित उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार करना है। इस परियोजना के तहत शहद एवं मधुमक्खी छत्ते से प्राप्त उत्पादों की प्रसंस्करण यूनिट की स्थापना की जाएगी जिससे उसकी गुणवत्ता में सुधार होगा और बाजार में प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी। इसके साथ साथ मिनी-शहद परीक्षण प्रयोगशाला की भी स्थापना की जाएगी जिसका उद्देश्य शहद की गुणवत्ता जांचना और इसे राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप बनाना है। इसके अतिरिक्त इस परियोजना के अंतर्गत मधुमक्खी पादप उद्यान का विकास भी किया जाएगा। जिसके अंतर्गत मधुमक्खियों के लिए अनुकूल पौधों की खेती और संरक्षण किया जाएगा, जिससे उनके प्राकृतिक आवास को बढ़ावा मिलेगा।

सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का समापन

बीकानेर @ पत्रिका. स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण का गुरुवार को समापन हुआ। समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रशिक्षु आईपीएस विशाल और विशिष्ट अतिथि कुलसचिव डॉ. देवा राम सैनी व वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री थे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने की। कृषि महाविद्यालय के पादप रोग विज्ञान विभाग की मशरूम उत्पादन इकाई की ओर से आयोजित प्रशिक्षण के समापन कार्यक्रम में अतिथियों ने बीकानेर, चूरू, श्रीगंगानगर, जोधपुर, झुंझुनूं समेत विभिन्न जिलों के 60 से ज्यादा प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षु आईपीएस विशाल ने कहा कि विश्वविद्यालयों में हम अनुसंधान की बातें करते हैं लेकिन अनुसंधान को कैसे धरातल पर उतारा जाता है, वह स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण कार्यक्रम में देखने को मिला। साथ ही कहा कि प्रशासन में जो 360 डिग्री इवोलुशन की बात की जाती है वह इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उतारा गया। विभागाध्यक्ष डॉ. दाताराम कुम्हार ने बताया कि मशरूम पूरी तरह से शाकाहारी उत्पाद है। भूमिहीन किसानों के लिए मशरूम उत्पादन आजीविका कमाने का बहुत अच्छा विकल्प हो सकता है।

अनुसंधान को कैसे धरातल पर उतारा जाता है वह एसकेआरएयू के मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण में देखने को मिला- विशाल, प्रशिक्षु आईपीएस, बीकानेर

मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण के समापन कार्यक्रम में बोले प्रशिक्षु आईपीएस श्री विशाल

ओम एक्सप्रेस

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण का गुरुवार को समापन हुआ। मानव संसाधन विकास निदेशालय सभागार में हुए समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रशिक्षु आईपीएस श्री विशाल और विशिष्ट अतिथि कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी व वित्त नियंत्रक श्री राजेन्द्र कुमार खत्री थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की। कृषि महाविद्यालय, बीकानेर के पादप रोग विज्ञान विभाग की मशरूम उत्पादन इकाई द्वारा आयोजित प्रशिक्षण के समापन कार्यक्रम में अतिथियों ने बीकानेर, चूरू, श्रीगंगानगर, जोधपुर, झुंझुनूं समेत विभिन्न जिलों के 60 से ज्यादा प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

समापन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रशिक्षु आईपीएस श्री विशाल ने कहा कि

विश्वविद्यालयों में हम अनुसंधान की बातें करते हैं लेकिन अनुसंधान को कैसे धरातल पर उतारा जाता है। वह स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण कार्यक्रम में देखने को मिला। साथ ही कहा कि प्रशासन में जो 360 डिग्री इवोलुशन की बात की जाती है वह इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उतारा गया। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण को अगली बार और बेहतर बनाने के लिए प्रतिभागियों से सुझाव भी लें।

कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि इस प्रशिक्षण के जरिए निश्चित रूप से मशरूम के इंटरप्रेन्योर तैयार होंगे। साथ ही कहा कि कृषि विश्वविद्यालय में विभिन्न प्रशिक्षण लेने के बाद जो भी इंटरप्रेन्योर बने हैं उनके उत्पादों को आगामी कृषि मेले में निशुल्क स्टॉल आवंटित कर प्रदर्शित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रतिभागियों के सुझाव को मानते हुए कृषि विश्वविद्यालय में जल्द ही बटन मशरूम उत्पादन को लेकर 35 दिन की ट्रेनिंग कराई जाएगी। कृषि विश्वविद्यालय अपने दायित्वों के निर्वहन में कोई कोर कसर नहीं छोड़ेगा।

कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी ने कहा कि प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण में जो भी सीखा, उसके बारे में अन्य लोगों को भी बताएं। सोशल मीडिया का जमाना है सोशल मीडिया के जरिए भी बता सकते हैं। उन्होंने कहा कि मशरूम उत्पादन से मशहूर होने की बात हो जाए तो हम सबके लिए बड़ी खुशी की बात होगी और जो इस प्रशिक्षण से महरूम रह गए,उन तक भी प्रशिक्षण की बात पहुंचे तो बड़ी खुशी होगी। वित्त नियंत्रक श्री राजेन्द्र कुमार खत्री ने कहा कि उन्हें बहुत खुशी हुई जब प्रतिभागियों ने कहा कि हमारी बहुत ही उपयोगी ट्रेनिंग हुई है। उन्होंने कहा कि मशरूम उत्पादन के जरिए कम पूंजी में आजीविका अर्जन किया जा सकता है। विश्वविद्यालय का इस प्रशिक्षण पर जितना भी खर्च हुआ है उसका हमें शत प्रतिशत लाभ प्राप्त हुआ है।

इससे पूर्व कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों को साफा पहना कर और पुष्प गुच्छ भेंट कर और मां सरस्वती की प्रतिमा के आगे द्वीप प्रज्वलन से हुई। प्रशिणार्थी श्रीमती ज्योति ने बताया कि इसी साल फरवरी में हिमाचल के सोलन में करीब 60-70 हजार रुपए खर्च कर मशरूम उत्पादन की ट्रेनिंग ली लेकिन ज्यादा समझ नहीं आया। एसकेआरएयू में मातृभाषा में जिस तरह से व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। वह अतुलनीय है। श्री जितेश मिढ्ढा ने बटन मशरूम उत्पादन को लेकर 35 दिन की ट्रेनिंग रखने की बात कही।

स्वागत भाषण देते हुए पादप रोग विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ दाताराम कुम्हार ने बताया कि मशरूम पूरी तरह से शाकाहारी उत्पाद है। भूमिहीन किसानों के लिए मशरूम उत्पादन आजीविका कमाने का बहुत अच्छा विकल्प हो सकता है। साथ ही प्रतिभागियों को आश्वस्त करते हुए कहा कि मशरूम उत्पादन में उन्हें कोई भी दिक्कत आई तो उनकी टीम खुद चलकर उनके पास आएंगी और समस्या का समाधान करेगी।

कार्यक्रम के आखिर में सह आचार्य डॉ अशोक कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रशिक्षण में सह आचार्य डॉ अशोक, सहायक आचार्य डॉ अर्जुन यादव, एसआरएफ श्री मुकेश सेशमा समेत पादप रोग विज्ञान विभाग के छात्र-छात्राओं का विशेष सहयोग रहा। मंच संचालन डॉ केशव मेहरा ने किया। कार्यक्रम में कृषि विश्वविद्यालय के डीन, डायरेक्टर, विद्यार्थी समेत बड़ी संख्या में प्रतिभागी शामिल हुए।

मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण के समापन कार्यक्रम में बोले प्रशिक्षु आईपीएस विशाल

हिमाचल के सोलन में 60-70 हजार खर्च कर मशरूम उत्पादन की ट्रेनिंग ली लेकिन इतना समझ नहीं आया जितना एसकेआरयू में मातृभाषा में व्यावहारिक प्रशिक्षण में आया : ज्योति, प्रशिणार्थी

■ लोकमत , बीकानेर

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण का गुरुवार को समापन हुआ।समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रशिक्षु आईपीएस विशाल और विशिष्ट अतिथि कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी व वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की। कृषि महाविद्यालय, बीकानेर के पादप रोग विज्ञान विभाग की मशरूम उत्पादन इकाई द्वारा आयोजित प्रशिक्षण के समापन कार्यक्रम में अतिथियों ने बीकानेर, चूरू, गंगानगर, जोधपुर, झुंझुनूं समेत विभिन्न जिलों के 60 से ज्यादा प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। समापन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रशिक्षु आईपीएस विशाल ने कहा कि विश्वविद्यालयों में हम अनुसंधान की बातें करते हैं लेकिन अनुसंधान को कैसे धरातल पर उतारा जाता है। वह स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण कार्यक्रम में देखने को मिला। साथ ही कहा कि प्रशासन में जो 360 डिग्री इवोलुशन की बात की जाती है वह इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उतारा गया। उन्होने कहा कि प्रशिक्षण को अगली बार और बेहतर बनाने के लिए प्रतिभागियों से सुझाव भी लें। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि इस प्रशिक्षण के जरिए निश्चित रूप से मशरूम के इंटरप्रेन्योर तैयार होंगे। साथ ही कहा कि कृषि विश्वविद्यालय में विभिन्न प्रशिक्षण लेने के बाद जो भी इंटरप्रेन्योर बने हैं उनके उत्पादों को आगामी कृषि मेले में निशुल्क स्टॉल आवंटित कर प्रदर्शित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रतिभागियों के सुझाव को मानते हुए कृषि विश्वविद्यालय में जल्द ही बटन मशरूम उत्पादन को लेकर 35 दिन की ट्रेनिंग कराई जाएगी। कृषि विश्वविद्यालय अपने दायित्वों के निर्वहन में कोई कोर कसर नहीं छोड़ेगा। कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी ने कहा कि प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण में जो भी सीखा, उसके बारे में अन्य लोगों को भी बताएं। सोशल मीडिया का जमाना है सोशल मीडिया के जरिए भी बता सकते हैं। उन्होने कहा कि मशरूम उत्पादन से मशहूर होने की बात हो जाए तो हम सबके लिए बड़ी खुशी की बात होगी और जो इस प्रशिक्षण से महरूम रह गए,उन तक भी प्रशिक्षण की बात पहुंचे तो बड़ी खुशी होगी। वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री ने कहा कि उन्हें बहुत खुशी हुई जब प्रतिभागियों ने कहा कि हमारी बहुत ही उपयोगी ट्रेनिंग हुई है। उन्होने कहा कि मशरूम उत्पादन के जरिए कम पूंजी में आजीविका अर्जन किया जा सकता है। विश्वविद्यालय का इस प्रशिक्षण पर जितना भी खर्च हुआ है उसका हमें शत प्रतिशत लाभ प्राप्त हुआ है। इससे पूर्व कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों को साफा पहना कर और पुष्प गुच्छ भेंट कर और मां सरस्वती की प्रतिमा के आगे द्वीप प्रज्वलन से हुई। प्रशिणार्थी ज्योति ने बताया कि इसी साल फरवरी में हिमाचल के सोलन में करीब 60-70 हजार रुपए खर्च कर मशरूम उत्पादन की ट्रेनिंग ली लेकिन ज्यादा समझ नहीं आया। एसकेआरएयू में मातृभाषा में जिस तरह से व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। वह अतुलनीय है। जितेश मिड्ढा ने बटन मशरूम उत्पादन को लेकर 35 दिन की ट्रेनिंग रखने की बात कही। स्वागत भाषण देते हुए पादप रोग विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ दाताराम कुम्हार ने बताया कि मशरूम पूरी तरह से शाकाहारी उत्पाद है। भूमिहीन किसानों के लिए मशरूम उत्पादन आजीविका कमाने का बहुत अच्छा विकल्प हो सकता है। साथ ही प्रतिभागियों को आश्वस्त करते हुए कहा कि मशरूम उत्पादन में उन्हें कोई भी दिक्कत आई तो उनकी टीम खुद चलकर उनके पास आएंगी और समस्या का समाधान करेगी। कार्यक्रम के आखिर में सह आचार्य डॉ अशोक कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रशिक्षण में सह आचार्य डॉ अशोक, सहायक आचार्य डॉ अर्जुन यादव, एसआरएफ मुकेश सेशमा समेत पादप रोग विज्ञान विभाग के छात्र-छात्राओं का विशेष सहयोग रहा। मंच संचालन डॉ केशव मेहरा ने किया। कार्यक्रम में कृषि विश्वविद्यालय के डीन, डायरेक्टर, विद्यार्थी समेत बड़ी संख्या में प्रतिभागी शामिल हुए।

एसकेआरयू में अनुसंधान को धरातल पर उतारा है : विशाल

मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण का समापन

बीकानेर, (निसं)। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण का गुरुवार को समापन हुआ। समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रशिक्षु आईपीएस विशाल और विशिष्ट अतिथि कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी व वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की। कृषि महाविद्यालय, बीकानेर के पादप रोग विज्ञान विभाग की मशरूम उत्पादन इकाई द्वारा आयोजित प्रशिक्षण के समापन कार्यक्रम में अतिथियों ने बीकानेर, चूरू, श्रीगंगानगर, जोधपुर, झुंझुनूं समेत विभिन्न जिलों के 60 से ज्यादा प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। समापन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रशिक्षु आईपीएस विशाल ने कहा कि विश्वविद्यालयों में हम अनुसंधान की बातें करते हैं लेकिन अनुसंधान को कैसे धरातल पर उतारा जाता है। वह स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण कार्यक्रम में देखने को मिला। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि इस प्रशिक्षण के जरिए निश्चित रूप से मशरूम के इंटरप्रेन्योर तैयार होंगे। साथ ही कहा कि कृषि विश्वविद्यालय में विभिन्न प्रशिक्षण लेने के बाद जो भी इंटरप्रेन्योर बने हैं उनके उत्पादों को आगामी कृषि मेले में निशुल्क स्टॉल आवंटित कर प्रदर्शित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रतिभागियों के सुझाव को मानते हुए कृषि विश्वविद्यालय में जल्द ही बटन मशरूम उत्पादन को लेकर 35 दिन की ट्रेनिंग कराई जाएगी। कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी ने कहा कि प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण में जो भी सीखा, उसके बारे में अन्य लोगों को भी बताएं। सोशल मीडिया का जमाना है सोशल मीडिया के जरिए भी बता सकते हैं। उन्होने कहा कि मशरूम उत्पादन से मशहूर होने की बात हो जाए तो हम सबके लिए बड़ी खुशी की बात होगी और जो इस प्रशिक्षण से महरूम रह गए,उन तक भी प्रशिक्षण की बात पहुंचे तो बड़ी खुशी होगी। सह आचार्य डॉ अशोक कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण की सात दिवसीय कार्यशाला का समापन

कामयाब कलम रिपोर्टर।

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण का गुरुवार को समापन हुआ। मानव संसाधन विकास निदेशालय सभागार में हुए समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रशिक्षु आईपीएसविशाल और विशिष्ट अतिथि कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी व वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की। कृषि महाविद्यालय, बीकानेर के पादप रोग विज्ञान विभाग की मशरूम उत्पादन इकाई द्वारा आयोजित प्रशिक्षण के समापन कार्यक्रम में अतिथियों ने बीकानेर, चूरू, श्रीगंगानगर, जोधपुर, झुंझुनूं समेत विभिन्न जिलों के 60 से ज्यादा प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। समापन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रशिक्षु आईपीएस विशाल ने कहा कि विश्वविद्यालयों में हम अनुसंधान की बातें करते हैं लेकिन अनुसंधान को कैसे धरातल पर उतारा जाता है। वह स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण कार्यक्रम में देखने को मिला। वहीं कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि इस प्रशिक्षण के जरिए निश्चित रूप से मशरूम के इंटरप्रेन्योर तैयार होंगे। साथ ही कहा कि कृषि विश्वविद्यालय में विभिन्न प्रशिक्षण लेने के बाद जो भी इंटरप्रेन्योर बने हैं उनके उत्पादों को आगामी कृषि मेले में निशुल्क स्टॉल आवंटित कर प्रदर्शित किया जाएगा। कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी ने कहा कि प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण में जो भी सीखा, उसके बारे में अन्य लोगों को भी बताएं। सोशल मीडिया का जमाना है सोशल मीडिया के जरिए भी बता सकते हैं। उन्होने कहा कि मशरूम उत्पादन से मशहूर होने की बात हो जाए तो हम सबके लिए बड़ी खुशी की बात होगी। इस मौके पर वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री, प्रशिणार्थी श्रीमती ज्योति, जितेश मिढ्ढा, विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ दाताराम कुम्हार ने भी संबोधित किया। सह आचार्य डॉ अशोक कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रशिक्षण में सह आचार्य डॉ अशोक, सहायक आचार्य डॉ अर्जुन यादव, एसआरएफ मुकेश सेशमा समेत पादप रोग विज्ञान विभाग के छात्र-छात्राओं का विशेष सहयोग रहा। मंच संचालन डॉ केशव मेहरा ने किया।

मशरूम पूरी तरह शाकाहारी उत्पाद, प्रोटीन का है अच्छा स्रोत

हिंदुस्तान से रूबरू

बीकानेर(सुरेश जैन) स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण का गुरुवार को समापन हुआ। मानव संसाधन विकास निदेशालय सभागार में हुए समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रशिक्षु आईपीएस विशाल और विशिष्ट अतिथि कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी व वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की। कृषि महाविद्यालय, बीकानेर के पादप रोग विज्ञान विभाग की मशरूम उत्पादन इकाई द्वारा आयोजित प्रशिक्षण के समापन कार्यक्रम में अतिथियों ने बीकानेर, चूरू, श्रीगंगानगर, जोधपुर, झुंझुनूं समेत विभिन्न जिलों के 60 से ज्यादा प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। समापन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रशिक्षु आईपीएस विशाल ने कहा कि विश्वविद्यालयों में हम अनुसंधान की बातें करते हैं लेकिन अनुसंधान को कैसे धरातल पर उतारा जाता है। वह स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण कार्यक्रम में देखने को मिला। साथ ही कहा कि प्रशासन में जो 360 डिग्री इवोलुशन की बात की जाती है वह इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उतारा गया। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण को अगली बार और बेहतर बनाने के लिए प्रतिभागियों से सुझाव भी लें। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि इस प्रशिक्षण के जरिए निश्चित रूप से मशरूम के इंटरप्रेन्योर तैयार होंगे। साथ ही कहा कि कृषि विश्वविद्यालय में विभिन्न प्रशिक्षण लेने के बाद जो भी इंटरप्रेन्योर बने हैं उनके उत्पादों को आगामी कृषि मेले में निशुल्क स्टॉल आवंटित कर प्रदर्शित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रतिभागियों के सुझाव को मानते हुए कृषि विश्वविद्यालय में जल्द ही बटन मशरूम उत्पादन को लेकर 35 दिन की ट्रेनिंग कराई जाएगी। कृषि विश्वविद्यालय अपने दायित्वों के निर्वहन में कोई कोर कसर नहीं छोड़ेगा। कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी ने कहा कि प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण में जो भी सीखा, उसके बारे में अन्य लोगों को भी बताएं। सोशल मीडिया का जमाना है सोशल मीडिया के जरिए भी बता सकते हैं। उन्होने कहा कि मशरूम उत्पादन से मशहूर होने की बात हो जाए तो हम सबके लिए बड़ी खुशी की बात होगी और जो इस प्रशिक्षण से महरूम रह गए,उन तक भी प्रशिक्षण की बात पहुंचे तो बड़ी खुशी होगी। वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री ने कहा कि उन्हें बहुत खुशी हुई जब प्रतिभागियों ने कहा कि हमारी बहुत ही उपयोगी ट्रेनिंग हुई है। उन्होने कहा कि मशरूम उत्पादन के जरिए कम पूंजी में आजीविका अर्जन किया जा सकता है। विश्वविद्यालय का इस प्रशिक्षण पर जितना भी खर्च हुआ है उसका हमें शत प्रतिशत लाभ प्राप्त हुआ है। इससे पूर्व कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों को साफा पहना कर और पुष्प गुच्छ भेंट कर और मां सरस्वती की प्रतिमा के आगे द्वीप प्रज्वलन से हुई। प्रशिणार्थी श्रीमती ज्योति ने बताया कि इसी साल फरवरी में हिमाचल के सोलन में करीब 60-70 हजार रुपए खर्च कर मशरूम उत्पादन की ट्रेनिंग ली लेकिन ज्यादा समझ नहीं आया। एसकेआरएयू में मातृभाषा में जिस तरह से व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। वह अतुलनीय है। जितेश मिह्रा ने बटन मशरूम उत्पादन को लेकर 35 दिन की ट्रेनिंग रखने की बात कही। स्वागत भाषण देते हुए पादप रोग विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ दाताराम कुम्हार ने बताया कि मशरूम पूरी तरह से शाकाहारी उत्पाद है। भूमिहीन किसानों के लिए मशरूम उत्पादन आजीविका कमाने का बहुत अच्छा विकल्प हो सकता है। साथ ही प्रतिभागियों को आश्वस्त करते हुए कहा कि मशरूम उत्पादन में उन्हें कोई भी दिक्कत आई तो उनकी टीम खुद चलकर उनके पास आएंगी और समस्या का समाधान करेगी। कार्यक्रम के आखिर में सह आचार्य डॉ अशोक कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रशिक्षण में सह आचार्य डॉ अशोक, सहायक आचार्य डॉ अर्जुन यादव, एसआरएफ श्री मुकेश सेशमा समेत पादप रोग विज्ञान विभाग के छात्र-छात्राओं का विशेष सहयोग रहा। मंच संचालन डॉ केशव मेहरा ने किया। कार्यक्रम में कृषि विश्वविद्यालय के डीन, डायरेक्टर, विद्यार्थी समेत बड़ी संख्या में प्रतिभागी शामिल हुए।

विशाल, प्रशिक्षु आईपीएस, बीकानेर ने कहा...

अनुसंधान को कैसे धरातल पर उतारा जाता है वह एसकेआरएयू के मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण में देखने को मिला

मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण के समापन कार्यक्रम में बोले प्रशिक्षु आईपीएस विशाल

मशरूम पूरी तरह शाकाहारी उत्पाद, प्रोटीन का है अच्छा स्त्रोत

बीकानेर. कंचन केसरी

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण का गुरुवार को समापन हुआ। मानव संसाधन विकास निदेशालय सभागार में हुए समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रशिक्षु आईपीएस विशाल और विशिष्ट अतिथि कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी व वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की। कृषि महाविद्यालय, बीकानेर के पादप रोग विज्ञान विभाग की मशरूम उत्पादन इकाई द्वारा आयोजित प्रशिक्षण के समापन कार्यक्रम में अतिथियों ने बीकानेर, चूरू, श्रीगंगानगर, जोधपुर, झुंझुनूं समेत विभिन्न जिलों के 60 से ज्यादा प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। समापन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रशिक्षु आईपीएस विशाल ने कहा कि विश्वविद्यालयों में हम अनुसंधान की बातें करते हैं लेकिन अनुसंधान को कैसे धरातल पर उतारा जाता है। वह स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण कार्यक्रम में देखने को मिला। साथ ही कहा कि प्रशासन में जो 360 डिग्री इवोलुशन की बात की जाती है वह इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उतारा गया। उन्होने कहा कि प्रशिक्षण को अगली बार और बेहतर बनाने के लिए प्रतिभागियों से सुझाव भी लें। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि इस प्रशिक्षण के जरिए निश्चित रूप से मशरूम के इंटरप्रेन्योर तैयार होंगे। साथ ही कहा कि कृषि विश्वविद्यालय में विभिन्न प्रशिक्षण लेने के बाद जो भी इंटरप्रेन्योर बने हैं उनके उत्पादों को आगामी कृषि मेले में निशुल्क स्टॉल आवंटित कर प्रदर्शित किया जाएगा।

ना पक्ष ना विपक्ष, कलम वही जो चले निष्पक्ष, जन-जन तक पहुंचादे

नरेश कुमार मारू :- 7240278306 बीकानेर शुक्रवार 13 दिसम्बर 2024 पृष्ठ-2

भारत सरकार के राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड ने दी मंजूरी

एसकेआरएयू में 2 मीट्रिक टन क्षमता की शहद प्रोसेसिंग यूनिट होगी स्थापित

बीकानेर (निष्पक्ष कलम) । स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में 2 मीट्रिक टन क्षमता की 'शहद एवं मधुमक्खी छत्ते से प्राप्त उत्पादों की प्रोसेसिंग यूनिट' स्थापित की जाएगी। साथ ही शहद की गुणवत्ता जांचने के लिए 'मिनी शहद परीक्षण प्रयोगशाला' की भी स्थापना होगी। इसके अलावा 'मधुमक्खी पादप उद्यान' का विकास भी किया जाएगा।कुलपति डॉ अरुण कुमार ने बताया कि यह सब भारत सरकार के राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड द्वारा कृषि महाविद्यालय बीकानेर के कीट विज्ञान विभाग को राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन एवं शहद मिशन (एनबीएचएम) के तहत 12 दिसंबर को स्वीकृत किए गए 83.75 लाख रुपए के प्रोजेक्ट के तहत होगा।

कुलपति डॉ अरुण कुमार ने बताया कि उत्तरी पश्चिमी राजस्थान में मधुमक्खी पालन को लेकर यह पहला प्रोजेक्ट स्वीकृत किया गया है। यह प्रोजेक्ट मधुमक्खी पालन के क्षेत्र में किसानों और उद्यमियों के लिए नए अवसर प्रदान करेगा। साथ ही, शहद और मधुमक्खी उत्पादों की

उत्पादन क्षमता और गुणवत्ता में सुधार से यह क्षेत्र आत्मनिर्भर भारत अभियान में योगदान देगा।

कृषि महाविद्यालय बीकानेर के अधिष्ठाता डॉ पी.के.यादव ने बताया कि एसकेआरएयू कुलपति डॉ अरुण कुमार के विशेष प्रयासों के चलते कृषि विश्वविद्यालय को वर्ष 2011 के बाद लंबे अंतराल में भारत सरकार से इस वर्ष दो प्रोजेक्ट बांस उत्पादन और मधुमक्खी पालन स्वीकृत किए गए हैं। बांस उत्पादन को लेकर स्वीकृत प्रोजेक्ट के तहत राजस्थान के शुष्क इलाके में बांस की खेती की संभावनाओं पर कार्य प्रारंभ कर दिया गया है। मधुमक्खी पालन के इस प्रोजेक्ट भी पर भी जल्द ही कार्य शुरू कर दिया जाएगा।

कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ एल.एल. देशवाल ने बताया कि इस प्रोजेक्ट का उद्देश्य मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देना, उद्यमिता विकास करना और इससे संबंधित उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार करना है।

इस परियोजना के तहत शहद एवं मधुमक्खी छत्ते से प्राप्त उत्पादों की प्रसंस्करण यूनिट की स्थापना की जाएगी जिससे उसकी गुणवत्ता में सुधार होगा और बाजार में प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी।

इसके साथ साथ मिनी-शहद परीक्षण प्रयोगशाला की भी स्थापना की जाएगी जिसका उद्देश्य शहद की गुणवत्ता जांचना और इसे राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप बनाना है। इसके अतिरिक्त इस परियोजना के अंतर्गत मधुमक्खी पादप उद्यान का विकास भी किया जाएगा।

जिसके अंतर्गत मधुमक्खियों के लिए अनुकूल पौधों की खेती और संरक्षण किया जाएगा, जिससे उनके प्राकृतिक आवास को बढ़ावा मिलेगा।